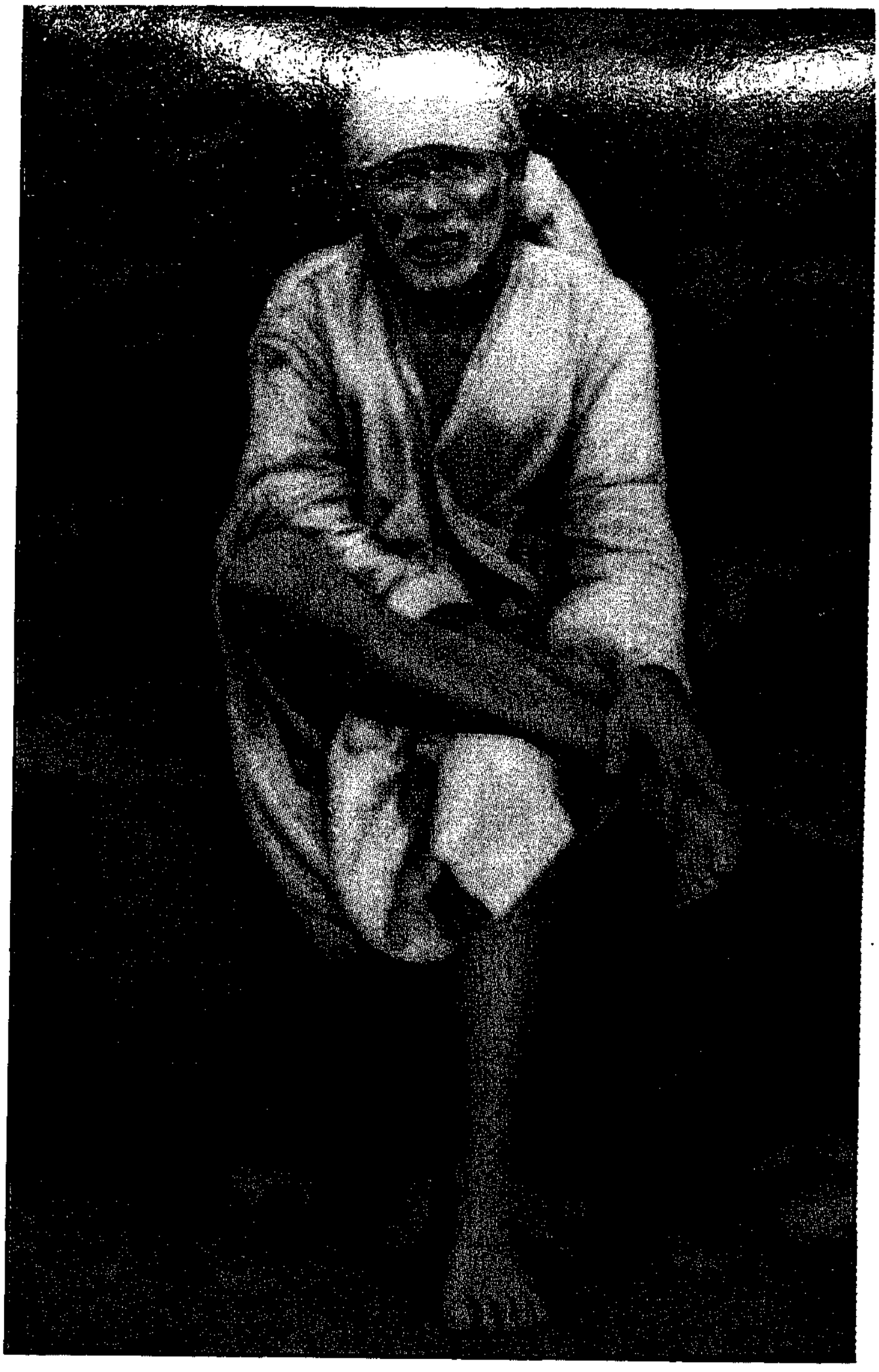

(हिन्दी)

श्री साईलीलामृत

श्री साईबाबा संस्थान, शिरडी प्रकाशन

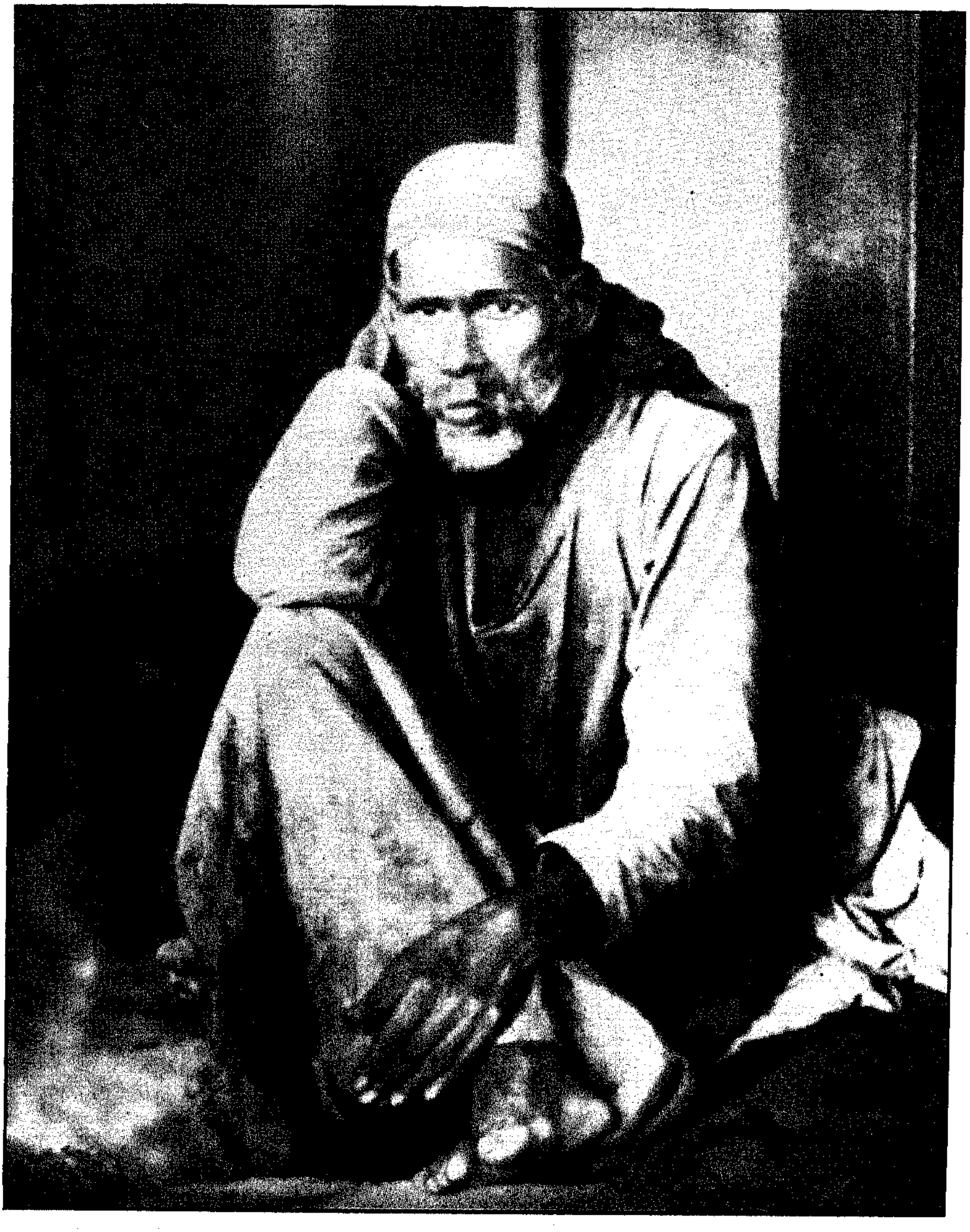

श्री साईलीलामृत

-: लेखक :-

प्र. सुं. आगासकर

-: अनुवादक :-

रा. शां. चिटणीस

-: संशोधन एवं संपादन :-

प्रो ए. पी. त्रिपाठी, बैतूल (म. प्र.)

श्री साईबाबा संस्थान, शिरडी प्रकाशन

२००२ (मूल्य : रु. १४.००)

-: प्रकाशक :-

श्री. द. म. सुकथनकर

-: अध्यक्ष :-

श्री साईबाबा संस्थान, शिरडी,

साईनिकेतन ८०४ बी. डॉ. आंबेडकर मार्ग,

दादर, मुंबई-४०० ०१४.

मुद्रक - **अनिल अपूर्व प्रिंटर्स ॲण्ड मॅन्यु. प्रा. लि.**

७५९/७४, प्रभात रोड,

पुणे - ४११ ००४.

✆ : ५६७२६६८, ५६७९३७८

सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन

बाराह (१०,००० प्रती)

प्राप्ति स्थान

---

१) श्रीसाईबाबा संस्थान, शिरडी, पो. शिरडी, जि अहमदनगर(महाराष्ट्र)

२) श्रीसाईबाबा संस्थान, मुंबई कार्यालय, साईनिकेतन ८०४ बी, डॉ. आंबेडकर मार्ग, दादर, बम्बई-४०० ०१४.

त्वदीयं वस्तु, गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये

की विनम्र भावे से

श्री सच्चिदानन्द सद्गुरु श्री साईनाथ

महाराज के श्रीचरणों मे सादर और

सश्रद्धा समर्पित

निवेदन

परब्रम्ह परमेश्वर ने जब पुण्यतोया भागीरथी को भारत-भूमि में प्रकट होने के साथ ही यह वरदान दिया कि जो पापी तुम्हारे पवित्र जल में स्नान करेगा, उसके समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे तो गंगा जी ने प्रतिवाद किया। ''प्रभु! तब तो मैं समस्त पापियों के पापों से बोझिल और दु:खी हो जाऊंगी, ''गंगा जी ने कहा। विष्णु भगवान ने व्यवस्था दी-''जब तुम्हारे जल मे कोई सन्त स्नान करेगा, तो समस्त पाप-समूह क्षार हो जायेगा।''

भारतीय वाङ्मय में सन्तों की कितनी महिमा बताई गई है, यह ऐसे अनेक दृष्टान्तों से सिद्ध किया जा सकता है। भारत-भूमि में अनादिकाल से ऐसे विलक्षण सन्तों का आविर्भाव होता रहा है। जिन्होंने परब्रम्ह का साक्षात्कार प्राप्त किया और नि:स्वार्थ भाव से आजीवन लोककल्याण का कार्य करते हुए अन्त में अपना पार्थिव शरीर इतनी ही आसानी से त्याग दिया जैसे हाथी के गले से माला गिर जाती है। 'सन्त कबीर जतन सों ओढी ज्यो की त्यों धर दीन्हि चदरिया।'

भारत की लम्बी सन्त-परम्परा में हम ऐसे अनेकों ईश्वर -भक्त महात्माओं की गणना कर सकते है, जिका नाम मात्र लेने से ही भक्तों के पाप नष्ट हो जाते हैं और उनका अन्त:करण निर्मल हो जाता है। ऐसी पुनीत सन्त-परम्परा में ही महाराष्ट्र के ब्रम्हलीन सन्त पूज्य श्री साईनाथ महाराज का भी श्रद्धालु भक्त बडे आदर से स्मरण करते है। इस महान विभूति ने अपने जीवन-काल में लोक कल्याण के इतने अलौकिक कार्य संपन्न किये कि मुमुक्षूओं ने उन्हें 'चमत्कार' का नाम दिया। भगवान् श्रीकृष्ण की कालियामर्दन-लीला को हम चमत्कार कहे तो उसका महत्व और आध्यात्मिक रहस्य घटा देते हैं। श्री साईनाथ महाराज की लीलाओं में भी जन-कल्याण के लिए आध्यात्मिक रहस्य निहित रहता था।

सन्तों की महिमा गाते हुए राम-भक्त गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है-'सत् संगति संसृति कर अंता।'लेकिन, सन्त के सान्निध्य में आकर ही यदि हम तद्रूप न हुए तो लाभ कैसे हो सकता है। तद्रूप होने की लिए सन्त द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलना और उनके गुण -गाण करना सबसे सुगम उपाय है। इसी उद्देश्य से श्री साईनाथ महाराज के पावन चरित्र को कई मराठी-भाषी भक्तों ने लिपि-बद्ध कर अपनी लेखनी को पवित्र किया है। भारत में ऐसे सन्त कम ही हुए है, जिनके उपदेशों का प्रचार करने के लिए अथवा भक्तों को सन्मार्ग पर लाने के उद्देश्य से उनसे सम्बंधित साहित्य का प्रतिमाह नियमित प्रकाशन होता है। पर, श्रीसाईनाथ महाराज के संबंधमें ऐसा ही हो रहा है, जबकि उन्होंने अपने जीवन-काल में अपने नाम या मत से कोई नया संप्रदाय नहीं चलाया। न ही आज भी उनके नाम से कोई संप्रदाय चल रहा है। तथापि श्रीसाईनाथ महाराज के पावन चवित्र से सहस्त्रों मुमुक्षू सन्मार्ग की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा पा रहे हैं और उनका कल्याण हो रहा है।

यद्यपि मराठी और अंग्रेजी में श्री साईनाथ महाराज के संबंध में प्रचुरमात्रा में साहित्य उपलब्ध है एवं उसकी अभिवृद्धि भी निरंतर हो रही है, तथापि देश की राष्ट्र-भाषा में अभी तक श्री साईनाथ महाराज के कल्याणकारी चरित्र का प्रकाशन नहीं हुआ था। अत: श्री साईनाथ महाराज की ही कृपा और प्रेरणा से ''श्री साईलीलामृत'' का यह हिन्दी अनुवाद प्रकशित करने का आयोजन किया गया है, ताकि अधिकाधिक मुमुक्षू सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त होने की प्रेरणा पा सकें। सम्भव है, अहिन्दी भाषी होने के नाते मेरे इस प्रयास में कुछ भूलें रह गई हों, फिर भी मै आशा करता हूँ की

गऊ बच्छ का ज्ञान गहि, दूध रहै लौ लाड।
सींग पूँछ पग परिहरै, अस्थन लागै धाइ॥

के अनुसार श्रद्धालु जन मेरी भूलों पर ध्यान न देकर तत्त्व की ओर

ही ध्यान देंगे।

श्री साईबाबा संस्थान, शिरडी के प्रबन्ध संरक्षक श्री नागेश आत्माराम सावंत और संयुक्त मंत्री श्री गजानन गोविन्द दाभोलकर का मैं विशेष रूप से आभारी हूँ, जिन्होंने हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने की अनुमति देकर मेरा कार्य सरल कर दिया। दिल्ली के एक तरूण व श्रद्धालू लेखक ने जो अपना नाम गोपनीय रखना चाहते है, हिन्दी अनुवाद के संशोधन में मुझे सहयोग दिया, उनके प्रति भी मै कृतज्ञ हूँ। डिलाइट प्रेस, दिल्ली के संचालक श्री निरंजन स्वरूप सक्सेना का भी मैं आभारी हूँ। दिल्ली पुस्तक कमर्शियल प्रेस, दिल्ली के संचालक श्री भारत स्वरूप सक्सेना तथा श्री जगदीश स्वरूप सक्सेना को भी मैं धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के तिरंगे लिए और इकरंगे चित्र छापने में सहयोग दिया है।

अंत मे मैं आशा करता हूँ कि साईनाथ महाराज के इस पावन चरित्र का मनन कर अधिकाधिक हिन्दी-भाषी लाभान्वित होंगे और मेरे इस छोटे से प्रयास को सराहेंगे।

विनीत

रा. शां. चिटणीस

कूँचा साँधियान
१४३९ फव्वारा,
दिल्ली -६.

प्रथम मराठी संस्करण की भूमिका

संसार में सुख-प्राप्ति के लिए मनुष्य का सतत प्रयत्न चलता रहता है। हमें सुख की प्राप्ति किस प्रकार हो, इस सम्बन्ध में मनुष्य के मन में कुछ निश्चित कल्पनाएँ होती हैं। धन से सुख प्राप्त हो सकता है, ऐसा मान कर मनुष्य ने 'कनक' की कामना की। स्त्री भी सुख का साधन है, ऐसा समझते हुए मनुष्य ने 'कामिनी' की भी कामना की। कुछ लोगों की सुखप्राप्ति की कल्पना लौकिक प्रतिष्ठा पर ही सीमित रही और वे कीर्ति सम्पादन करने के लिए ही सचेष्ट हुए। **बन्दनीय जेहि जग जस पावा**- उनका जीवन-सूत्र बन गया। परंतु देखने में यह आया कि ज्यों-ज्यों मनुष्य ने कनक, कामिनी और कीर्ती की प्राप्ति के लिए अविरल परिश्रम किया, त्यों -त्यों ये उसकी पहूँच से बाहर होते गए। अथक परिश्रम करने के बाद भी कनक, कामिनी और कीर्ति प्राप्त न होने से मनुष्य का दु:ख बढता गया। परंतु इससे भी आश्चर्य की बात देखने में यह आई की मनुष्य इनको प्राप्त करके भी दु:खी ही बना रहा। असंख्य अपरिमित सम्पत्तिवान, कोटीपति, रनिवास मे सैंकडो स्त्रियाँ रखने वाला विलासी राजा अथवा त्रिलोकी में कीर्ति पाने वाला एकाकी सेनापती, इन सभी के अन्तर टटोले जायं तो ये यही कहेंगे कि हमें समाधान नही मिला, शांती नही मिली।

मानव का मन ऐसा है की दिन के चौबीसों घन्टे, मास के तीसों दिन और वर्ष के बारहों महीने असंतुष्ट रहता है। हमे कोई वस्तु कैसे प्राप्त हो, यह आसक्ति और जो हमें प्राप्त नही हो रहा है। उसके लिए दु:ख यह मानस मन में सदा व्याप्त रहता है। इस स्थिति में सांसारिक दु:ख, देह के रोग, मन की यातना -सभी से मनुष्य अत्यन्त पीडित रहता है। इसी कष्ट में कभी उसके मन में यह प्रश्न भी उठता है।

'क्या संसार में मेरे मन को शुद्ध समाधान देने वाला भी कोई साधन हो सकता है ?' इस विचार से मनुष्य जब अपने चारों ओर दृष्टि फेंकने लगा, तब उसे

एक आश्चर्यजनक बात दिखाई दी । यह क्या! जगत में नित्य-समाधान, नित्य-सुख प्राप्त कर लेने वाले महापुरूष दिखाई देते है; पर वे कनक, कामिनी और कीर्ति का सब प्रकार से पूर्ण त्याग कर चुके है। सुख आसक्ति में नही, अनासक्ति में है। बाह्य जगत् में नही, अन्तर्मन में है, ऐसा हमारे पुराने सन्त-महात्मा बराबर उपदेश करते आए है। परंतु, मनुष्य इतना अधीर और अदूरदर्शी है कि वह अधिकारी महात्माओं की स्पष्ट घोषणा को समझने की किंचित चेष्टा नही करता और पथ-भ्रष्ट होकर सदा कामिनी, कनक और कीर्ति में ही सुख की खोज के लिए मारा-मारा फिरता है।

इस अज्ञानता की ओर मनुष्य का ध्यान आकर्षित करने के लिए उसे वास्तविक सुख की प्राप्ति का मार्ग स्पष्ट दिखाने के लिए और सुख की खोज में गलत मार्ग पर भटक रहे दु:खी जीव को सही मार्ग दिखाने के लिए समय समय पर महान विभूतियों ने अवतार धारण किया है । ऐसी ही अवतारी विभूतियों में से एक थे, श्री साई बाबा। साठ वर्ष पूर्व उन्होने शिरडी को अपने नित्य -निवास के लिए चुना था और इहलीला के संवरण तक वे वही रहे। उनका जन्म कहाँ हुआ, माँ-बाप कौन थे, उनकी शिक्षा कहाँ हुई, धर्म से वे हिन्दू थे अथवा मुस्लिम, इन बातों का कोई निर्णायक उत्तर देने के लिए प्रमाण उपलब्ध नही है। वह कहाँ के मूल निवासी थे, उनका जन्म का नाम क्या था, उनका बालपन कैसे व्यतीत हुआ और उनकी वृद्धि कहाँ हुई, इस सम्बन्ध में भी कोई प्रामाणिक जानकारी प्राप्त नही होती । लोगो के लिए अप्रसिद्ध, अज्ञात छोटे से गाँव में निवास करते हुए और सम्पति का ठाट-बाट तथा पाँडित्य की कीर्ति का कोई बाह्य आडम्बर न रखते हुए भी इस महापुरूष ने अपने ही ढंग से शिरडी में आने से अपने निर्वाणकाल पर्यंत लाखों जिज्ञासुओं के अन्त:करण अपनी ओर आकर्षित किए तथा उनके संसार -ताप-विदग्ध हृदयों को समाधानकारक शीतलता प्रदान की, यह कैसे आश्चर्य की बात है।

पर इस बात से आश्चर्य क्यों न हो? अज्ञानांधकार में लडखडाती, गिरती पडती मानव जाति को सत्य का प्रकाश दिखा कर सन्मार्ग की ओर लाने वाली अवतारी विभॅति को प्रारम्भ में जिस स्थान पर उपेक्षा मिली, वह हमेशा के लिए वही का कैसे हो गया! हजारो वर्षेसे जिसके तत्त्वोपदेशों को ग्रहण कर असंख्य जीवों का परम कल्याण हुआ, उन्ही भगवान श्रीकृष्ण का जन्म क्या कारागृह की कोठरी में नही हुआ? आधा संसार आज जिस के आगे अपना विनम्र मस्तक झुकाता है, इस ईसा मसीहा का जन्म भी क्या पशुशाला में नही हुआ? संसार के सब भागों मे आज जिनका उपदेशामृत शनै:शनै: , पर अधिकाधिक व्यापक क्षेत्र में फैलता जा रहा है। उन्ही श्री रामकृष्ण परमहंस का अवतार-कार्य क्या एक छोटे-से गाँव में चन्द्रमौलि की झौपडी से शुरू नही हुआ? पर संसार के लिए अज्ञात परिस्थितियों में अपना लौकिक जीवन आरम्भ करनेवाली इस महान विभूति के अवतार कार्य का उज्ज्वल दीपक आज जगत के कोने-कोने में अपना प्रकाश पहूँचा रहा है। रात्रि के प्रशान्त समय में जब आकाश से ओस-कण गिरते है तो उनकी आवाज किसी को सु नाई नही देती। परन्तु प्रात:काल उन्हीं ओसकणों से सारे पुष्प विकसित और प्रफुल्लित दृष्टिगत होते है। उसी प्रकार महान पुरूषों का कार्य बाजे -गाजे के साथ नही, अत्यन्त शान्ति के साथ होता रहता है। उनका कार्य मनुष्य के मन को विकसित करने और शाश्वत सुख देने वाला होता है।

श्रीसाई बाबा के चरित्र का जो अध्ययन करेंगे, उन्हें ज्ञात होगा कि मानव जाति की व्यथा से व्यथित होकर उसका दु:ख दूर करने में श्री बाबा के जीवन का एक-एक क्षण किस प्रकार व्यतीत होता था। मनुष्य को उसकी दीन स्थिति से बाहर लाकर उसे 'आत्मानन्द-साम्राज्य' हा सिंहासन प्राप्त कराने का मार्ग दिखाने वाला यह महात्मा स्वत: भिक्षावृत्तिद्वारा निर्वाह करता था, लकडी के एक तख्ते पर सोता था और

एक उपेक्षित मस्जिद में पडा रहता था। परन्तु जिस किसी वस्तु का उसने स्पर्श किया, वह वस्तु आज भी उसके दैवी स्पर्श दिव्य तेज प्राप्त कर रही है। उस वस्तुमें मानव के कष्टमय जीवन को दिलासा देने का विलक्षण सामर्थ्य उत्पन्न हुआ है।

श्री बाबा ने अपनी ओर से तत्त्वज्ञान का कोई विशिष्ट, स्वतंत्र मार्ग नही चलाया।'षड् दर्शन' की भाँति 'साईदर्शन' जैसी तत्व-विवेचना करने वाली कोई नयी शाखा उत्पन्न नही हुई। पर, उनके तमाम जीवन में ही तत्त्व-ज्ञान के सम्पूर्ण व महान साक्षात्कार का अनुभव दृष्टिगत होता है। उनके चरित्र में अनेक चमत्कारपूर्ण घटनाएँ देखने को मिलती है। इन घटनाओं को पढते हुए पाठक को चाहे वही रोमांचकारी विस्मय क्यों न हो, जो अरबी के रोचक, रहस्यपूर्ण आख्यानों में प्राप्त है; पर, इन चमत्कारों में श्री बाबा की लीलाओं का अद्‌भुत रहस्य सन्निहित है। इन चमत्कारों में श्री बाबा की दीन वत्सलता, अनासक्ति, ज्वलंत वैराग्यवृत्ति, चित्त की समता और आत्मतृप्ति का दर्शन होता है। इन बातों में ही श्री बाबा की अलौकिक विभूति का महत्त्व प्रकट होता है।

प्रस्तुत पुस्तक के इक्कीस अध्यायों में श्री साई बाबा के जीवन के अत्यन्त उद्‌बोधक प्रसंग सरल और रोचक भाषा में लिखे गये है। बाबा की भक्ति से प्रेरित होकर ही लेखक महोदय ने इन प्रसंगों को लिपिबद्ध करने का प्रयास किया है। इसमें उनका उद्देश्य उपदेश करने अथवा प्रचार करने का नही राहा है। बाबा के जीवन की जो-जो घटनाएँ स्वयं उन्हें अत्यंत बोधपूर्ण व हृदयस्पर्शी प्रतीत हुई और जिनसे उनके मन को बोध मिला, उन्हें ही इस पुस्तक में स्थान दिया गया है। इन घटनाओं को लिखते हुए लेखक स्वयं उनके रंग में रंग गया है। इसलिए इन्हें पढते समय लेखक के आंतरिक ऊहापोह का स्पर्श पाकर पाठक भी रंग गया तो यह स्वाभाविक ही रहेगा।''हम तो केवल बाबा की कथा कह रहे है, उसमें से पाठक

अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार ही उपदेश ग्रहण करेंगे, हमारा काम प्रवचन करने का नही, वरन् निवेदन करने का है,'' ऐसा लेखक का आग्रह है। इसी दृष्टिकोन से उन्होंने श्री बाबा का जो जीवनचरित्र लिखा है, उसमें पाठक को बीच-बीच में श्री साईबाबा की जीवनदृष्टि का दर्शन भी होगा। उनका यह सहज और स्वाभाविक स्फूर्ति - जन्य प्रयास निश्चय ही सरस व मनोज्ञ बन पडा है।

श्री बाबा के अलौकिक अवतार -कार्यों की दिशा कैसी होती थी अथवा उनका प्रकार क्या होता था, इसका लेखक ने स्वाभाविक वर्णन किया है। पृष्ठ १४ पर लेखक महोदय ने कहा है-''बाबा के अनेकों भक्त उन्हें एक सिद्ध साधक ही नही मानते थे; वरन् परमेश्वर का अवतार मानते थे। पर, श्री बाबा ने उपदेश करते हुए स्वयं अपने मुँह से ऐसा कभी अधिकारपूर्वक नही कहा। अपने लिए वे सदा ''अल्ला का सेवक ''और ''बन्दा''जैसे शब्दों का प्रयोग करते थे। वे स्वयं ऐसा मानते थे की ''मुझ पर मेरे गुरू की पूर्ण कृपा है। मै तो केवल निमित्त मात्र हूँ। गुरू की कृपा और आशीर्वाद से मैं भक्तों को संकट से मुक्त करता हूँ और उन्हें सन्मार्ग की दिशा दिखाता हूँ। साठ वर्ष के लम्बे समय में उनका भक्त समुदाय हजारो की संख्या में बढा, परन्तु किसी एक भी व्यक्ति के सामने उन्होंने ''मै ही सब कुछ हूँ या मैं स्वयं परमेश्वर हूँ '' ऐसे उद्‌गार प्रकट नही किए। मै तो परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता हूँ। मैं स्वयं उस दयाधन का तुच्छ सेवक हूँ। ऐसा वे सार्वजनिक रूप से स्वीकार करते थे। केवल मुँह से बाते बनाने की अपेक्षा श्री बाबा का झुकाव हाथ से काम करके दिखाने की ओर रहता था। बाबा ने धर्मोपदेशकों की भाँति लम्बे-लम्बे प्रवचन या उपदेश करने का कभी प्रयत्न नही किया। सहज रूप से उन्होंने तो एकाध बार लीला करके ही दिखाई और इसका गहन गूढ अर्थ समझने के लिए भक्तगणों को अपनी बुद्धि लगानी पडती थी।

श्री बाबा की संपूर्ण लीला को एक ही स्थान पर संकलित करना सम्भव नही जान पडता। बाबा की लीलाएँ ऐसे अतर्क्य सामर्थ्य से परिपूर्ण होती थी कि उनके लिए ''अनोरणीयान् महतो महीयान्''की उक्ति ही ठीक बैठती है। इसमें सन्देह नही कि यह 'श्री साईलीलामृत' कथा पढ कर पाठकों के मन में कुछ समय तक के लिए संसार-ताप भूल जायेंगे और वे अंत:करण को चिर समाधान देने वाला ईश्वर-भक्ति का मार्ग पा जायेंगे। नित्य-सुख प्राप्ति के लिए प्राचीन ऋषियों ने ''आत्मा वा अरे द्रष्टव्य: श्रोतव्यो मत्नव्यो निदिध्यासितव्य:'' का मार्ग बताया है। आत्मदर्शन करने के लिए उसका श्रवण करो, नित्य मनन करो और निदिध्यासन करो। पर आज के युग में आत्म-दर्शन करने के लिए यह मार्ग सर्वसुलभ नही है। पर अनेक साधु-संतों व अवतारी पुरूषों ने इनके लिए एकमात्र भक्ति-मार्ग ही उज्ज्वल किया है। इस मार्ग का अवलंब लेने कि लिए एक ही शब्द बदलना क्या पर्याप्त और कालोचित नही है?'' श्री साई बाबा अरे द्रष्टव्य: श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्य:।''

मुंबई, नागेश आत्माराम सावंत
अनन्त चतुर्दशी, प्रबंध संरक्षक
शके, १८७५ **श्री साई बाबा संस्थान, शिरडी।**

वक्तव्य

यह बडे हर्ष की बात है कि दिल्ली के श्री. रा. शां. चिटणीस ने मराठी पुस्तक 'श्री साईलीलामृत' का हिन्दीभाषियों के लिए अनुवाद किया है। श्री सद्गुरू साईनाथ महाराज की प्रेरणा और आशीर्वाद से ही यह महत्त्वपूर्ण कार्य संपन्न हुआ है। श्री साईबाबा संस्थान, शिरडी की और से मैं इस पुस्तक का स्वागत करता हूँ और अनुवादक को धन्यवाद देता हूँ। मुझे पूर्ण आशा है कि हिन्दी के पाठक इस पुस्तक की उपयोगिता को सहर्ष स्वीकार करेंगे और हमें शीघ्र ही पुस्तक का दुसरा संस्करण प्रकाशित करने का अवसर प्रदान करेंगे।

मुंबई
रामनवमी, संवत २०१७

ग. गो. दाभोलकर
संयुक्त मंत्री,
श्रीसाईबाबा संस्थान शिरडी।

श्री साईलीलामृत

प्रथम अध्याय

अद्भुत सत्पुरूष

गुरूर्ब्रम्हा गुरूर्विष्णु गुरूर्देवो महेश्वर: ।
गुरू: साक्षात्परब्रम्ह तस्मै श्रीगुरूवे नम: ।।

हमारा भारतवर्ष अत्यन्त प्राचीन काल से ही संत-साहित्य के लिए सुप्रसिद्ध है। हजारों संत इस पुण्य-भूमि पर प्रकट हुए तथा अपनी-अपनी विशिष्ट पद्धति से अपना अवतार-कार्य सम्पन्न करते हुए वे लोक-जाग्रति कर ब्रम्हा-लीन हो गये। यदि हम अपने प्राचीन सनातन धर्म का सूक्ष्म अध्ययन करें तो पायेंगे कि समय समय पर इस पुण्य भारत-भूमि पर अवतीर्ण अनेक अधिकारी व्यक्तियों ने इस विश्व की गहन-गूढ पहेली को स्वयं ही हल नही किया, प्रत्युत् जिस सत्य का उन्होंने उद्घाटन किया, उसका भावुक अन्त:करण वाले संसार-ग्रस्त प्राणियों को भी दर्शन कराया। सन्तों की यह शिक्षा जीवात्मा और परमात्मा को जोडने वाली कडी के समान ही है। सन्त पुरूष वास्तव में मार्गदर्शक गुरू है। महाराष्ट्र के सर्वश्री ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम आदि सन्तों ने हमें भक्ति का सच्चा मार्ग दिखाया। श्री समर्थ रामदास स्वामी जी ने तो राज-कारण अपना कर मोह-निद्रा-ग्रस्त राष्ट्र की आँखें ही नही खोली, वरन् हमारी उस कर्म-भूमि पर मानव धर्म के अत्यन्त पवित्र और मूल्यवान् सत्य को प्रतिष्ठित कर लोगों को परमेश्वर-प्राप्ति का उत्कृष्ट मार्ग बताया। यही लक्ष्य उनके जीवन की परिणति बना।

श्री समर्थ स्वामी रामदास जी के पश्चात दो सौ वर्ष समाप्त होते - होते ही श्री अवधूत दत्तात्रेय इस पुण्य-भूमि पर श्री सद्गुरू साई बाबा के रूप में पुन: अवतीर्ण हुए। सन १८३८ से १९१८ पर्यंत ८० वर्षों की काल मर्यादा